डॉ. डेव मैथ्यूसन, रहस्योद्घाटन, व्याख्यान 19, प्रकाशितवाक्य 13, दो जानवर

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह रहस्योद्घाटन अध्याय 13, द टू बीस्ट्स पर सत्र संख्या 19 है।

अध्याय 12 में पहले जानवर को शैतान के एजेंट के रूप में वर्णित करने और उससे कई संबंध बनाने के बाद, अब लेखक, श्लोक 3 से 8 में, लेखक को यह वर्णन करते हुए देखना शुरू करता है कि जानवर क्या करता है और लोग कैसे प्रतिक्रिया देते हैं।

यदि हमें जानवर को रोमन साम्राज्य और/या सम्राट से जोड़ना है, तो अब हम देखेंगे कि सम्राट ने पूरे रोमन साम्राज्य में क्या किया, और हम देखेंगे कि लोगों ने उस पर क्या प्रतिक्रिया दी। सबसे पहले, ध्यान दें कि जानवर दावा करता है, जैसा कि हमने पहले ही कुछ बार उल्लेख किया है, जानवर सार्वभौमिक पूजा और निष्ठा का दावा करता है। इसकी स्पष्ट अजेयता के कारण, पूरी दुनिया अब जानवर का अनुसरण करती है, और वे ड्रैगन और जानवर दोनों की पूजा करते हैं।

यह संभव है कि कम से कम एक स्तर पर, यह, हालांकि, व्यापक स्तर पर, यह रोम के बारे में लोगों की समझ और रोम के प्रति उनके दृष्टिकोण और रोम के प्रति उनकी निष्ठा का प्रतिनिधि हो सकता है। अधिक विशेष रूप से, यह उस रूप का प्रतिनिधित्व कर सकता है जो सम्राट पंथ का रूप लेगा। तो यहाँ जो चित्रित किया गया है वह एक ऐसा राष्ट्र है जिसने अपनी शक्ति को पूर्ण कर लिया है और अब, अहंकार और अभिमान में कार्य करते हुए पूजा और निष्ठा की मांग करता है जो केवल भगवान और मेमने से संबंधित है।

प्रश्न को दिलचस्प ढंग से नोट करें: श्लोक 4 का प्रश्न लोगों के यह कहने के साथ समाप्त होता है कि जानवर के समान कौन है, और कौन उसके खिलाफ युद्ध कर सकता है? यह प्रश्न या यह भाषा आवश्यक नहीं है कि किसी एक व्यक्ति ने इसका शाब्दिक रूप से वर्णन किया हो, बल्कि यह केवल रोम के प्रति दृष्टिकोण और रोम को चित्रित करने के तरीके और लोगों के रोम को देखने के तरीके को दर्शाता है; यह भाषा फिर से पुराने नियम से निकली है। उदाहरण के लिए, निर्गमन अध्याय 15 में, मूसा का गीत, जिसे हम बजाते हुए देखेंगे, प्रकाशितवाक्य के एक पाठ में थोड़ी देर बाद एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। निर्गमन अध्याय 15 और श्लोक 11 में, इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाए जाने के बाद, वे लाल सागर पार करते हैं, और अब वे मूसा का गीत गाते हैं।

श्लोक 11: हे भगवान, देवताओं में से आपके समान कौन है? आपके जैसा कौन है? पवित्रता में राजसी, महिमा में अद्भुत, अद्भुत काम करने वाला। यशायाह अध्याय 44 और श्लोक 7 एक और दिलचस्प है। कभी-कभी, आप भजन अध्याय 89 और श्लोक 10 भी देख सकते हैं।

लेकिन यशायाह अध्याय 44 और श्लोक 7 और यशायाह 44 के बारे में जो महत्वपूर्ण है वह उन ग्रंथों में से एक है जिसमें कथन है, आप पहले और आखिरी हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि मूर्तिपूजा के संदर्भ में केवल ईश्वर ही पूजा के योग्य है। केवल ईश्वर के अलावा किसी अन्य व्यक्ति की पूजा या निष्ठा करना मूर्तिपूजा है।

और इसलिए यशायाह के अध्याय 44 और श्लोक 7 में, हम श्लोक 7 पढ़ते हैं, फिर मेरे जैसा कौन है? परमेश्वर कहता है, वह इसका प्रचार करे। वह घोषणा करे और मेरे सामने रखे कि जब से मैंने अपने प्राचीन लोगों की स्थापना की है तब से क्या हुआ है। तो यह विषय, कौन मेरे जैसा है या कौन भगवान जैसा है, अब फिर से एक विकृत पैरोडी में, जानवर को जिम्मेदार ठहराया गया है और लोग कह रहे हैं कि कौन जानवर जैसा है और कौन संभवतः उसके खिलाफ युद्ध कर सकता है।

तो, जानवर को भगवान की शैतानी नकल के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। और मैं सोचता हूँ कि इस विचार में एक अपवित्र त्रिमूर्ति, सच्ची त्रिमूर्ति की एक विकृत पैरोडी को जोड़ा जा रहा है, और अब रोम द्वारा किए जा रहे दावों के कारण होने वाली ईशनिंदा और मूर्तिपूजा का वर्णन किया जा रहा है। वे पुराने नियम के किसी भी अन्य साम्राज्य की तरह हैं, जिसने उस अधिकार का दावा किया जो केवल ईश्वर का है, जिसने अपनी शक्ति को निरंकुश कर दिया, जिसने पूर्ण शक्ति और दिव्यता का दावा किया, और ईश्वर के लोगों पर इस तरह से अत्याचार किया जो अधर्मी और मूर्तिपूजक था।

दूसरी बात यह है कि ध्यान दें कि जानवर भगवान की निन्दा करता है और अपने निवास में उसके नाम की निंदा करता है, शायद डैनियल अध्याय 7 और छंद 6 से 8 की ओर इशारा करता है जहां हम जानवर को कुछ ऐसा ही करते हुए देखते हैं। यह एक बार फिर सम्राट पंथ का संदर्भ हो सकता है। यह समग्र रूप से रोम का एक दृष्टिकोण भी हो सकता है, लेकिन यह अधिक विशेष रूप से सम्राट पंथ को प्रतिबिंबित कर सकता है और यहां तक कि डोमिनिशियन देवता के दावों को भी प्रतिबिंबित कर सकता है; उदाहरण के लिए, यदि प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय यह साम्राज्य का शासन था, तो देवता ने खुद डोमिशियन द्वारा दावा किया था और निष्ठा और प्रशंसा और यहां तक कि पूजा भी जो अक्सर डोमिशियन को दी जाती थी, विशेष रूप से सात शहरों में स्थानीय स्तर पर सम्राट पंथ के सहयोग से एशिया माइनर के साथ-साथ अन्य शहरों में भी।

तीसरा, ध्यान दें कि जानवर 42 महीनों से सक्रिय है, और हम पहले ही इस तथ्य पर गौर कर चुके हैं कि 40 परीक्षण का समय सुझाता है, हालांकि संरक्षण का भी समय। तो, 42 महीनों का यह उल्लेख जानवर की गतिविधि को अध्याय 11 में जो चल रहा था, उससे जोड़ता है, लेकिन अध्याय 12 में शैतान की गतिविधि को भी जोड़ता है। इसलिए, अध्याय 13 की घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में न देखने का यह एक और कारण है अध्याय 12.

लेकिन अगर हम साढ़े तीन साल या समय गुना और आधा समय, 42 महीने और 1260 दिन को एक ही अवधि को संदर्भित करने के विभिन्न तरीकों के रूप में लेते हैं, तो 42 महीने स्पष्ट रूप से इसे बाहर निकालने के साथ जोड़ते हैं। अध्याय 11 की शुरुआत में बाहरी अदालत, जो क्लेश और परीक्षण के समय में चर्च का प्रतिनिधित्व करती थी। इसके अलावा, समय, समय और आधा

समय, अध्याय 11 में दो गवाहों की गवाही, अध्याय 12 में शैतान की गतिविधि के संरक्षण और महिला के संरक्षण और उसके बच्चों के उत्पीड़न का समय और आधा समय, इन सभी घटनाओं का अब 42 महीनों के उल्लेख के साथ आगे वर्णन किया जा रहा है। इसलिए, 42 महीनों की पशु गतिविधि को पिछले अध्यायों में अन्य सभी समय संदर्भों के समान अवधि को कवर करने के रूप में देखा जाना चाहिए।

ध्यान देने योग्य चौथी बात यह है कि जानवर संतों के साथ युद्ध करता है, जो हमें पिछले अध्यायों से भी जोड़ता है। उदाहरण के लिए, अध्याय 11, श्लोक 17 में, रसातल से निकले जानवर ने ठीक यही किया। उसने दोनों गवाहों से युद्ध किया।

अध्याय 12, श्लोक 17 में, ड्रैगन बिल्कुल यही करता है। तब अजगर स्त्री पर क्रोधित हो गया और उसकी बाकी संतानों के विरुद्ध युद्ध करने चला गया। तो, अब हम विशेष रूप से देखते हैं कि ड्रैगन महिला की संतानों के साथ कैसे युद्ध करता है? उस जानवर के द्वारा जो लोगों और पवित्र लोगों से युद्ध कर रहा है।

इसलिए, जॉन फिर से उनकी स्थिति की वास्तविक प्रकृति का खुलासा कर रहा है ताकि उन्हें उनके संघर्ष और उनके उत्पीड़न के वास्तविक स्रोत को देखने की अनुमति मिल सके। उनका उत्पीड़न एक राक्षसी रूप से प्रेरित जानवर के हाथों है। पाँचवाँ, जानवर पूरी पृथ्वी पर संप्रभुता का दावा करता है।

इस बारे में दो बातें हैं। ध्यान दें कि हम इस पर लौटेंगे, लेकिन सार्वभौमिक भाषा, रोम की लगभग अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा, जिसका संपूर्ण पृथ्वी पर अधिकार है, पर ध्यान दें। इसका एक कारण, मुझे लगता है, कि प्रकाशितवाक्य के प्रमुख विषयों में से एक जिसे हम पहले ही प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 की सातवीं मुहर में देख चुके हैं, वह यह है कि दुनिया का राज्य कैसे भगवान और उनके मसीहा का राज्य बन जाता है। दूसरे शब्दों में, पृथ्वी का राज्य शैतान और जानवर से अब परमेश्वर और मेम्ने को कैसे स्थानांतरित हो जाता है? तो, संपूर्ण पृथ्वी पर रोम के प्रभुत्व पर जोर देकर, यह इस विषय में योगदान देता है कि पृथ्वी के राज्य का, दुनिया का, रहस्योद्घाटन अध्याय 11, अब हाथों में कैसे स्थानांतरित होता है, यह भगवान की संप्रभुता को कैसे स्थानांतरित किया जाता है और मेम्ना, या परमेश्वर और मेम्ने की पूर्ण संप्रभुता, जिसे अध्याय 4 और 5 में पहचाना और पूजा जाता है, अंततः पृथ्वी पर कैसे कार्यान्वित होती है? तो, इसी कारण से, अब, रोम में, हम उस जानवर को पूरी पृथ्वी पर अधिकार का दावा करते हुए पाते हैं। लेकिन मैं इस बारे में दो टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ।

सबसे पहले, और इस खंड के बारे में दो टिप्पणियाँ। सबसे पहले, रोम के अधिकार को सार्वभौमिक के रूप में देखा जाना लगभग अतिशयोक्तिपूर्ण है। और शायद यह सर्वनाशकारी प्रकार के साहित्य में जानबूझकर किया गया है।

यह वर्तमान पृथ्वी पर रोम के संपूर्ण प्रभुत्व और शक्ति तथा अधिकार को दिखाने का लेखक का तरीका है। लेकिन ऐसा भी लग सकता है कि जॉन कुछ और भी सोच रहे हों। यानी, रोम का शासन एक व्यापक तस्वीर का हिस्सा मात्र है।

रोम का शासन पूरी पृथ्वी के शासकत्व का एक अग्रदूत और उसका हिस्सा और प्रत्याशा मात्र है जिसे अभी भी ईश्वर और उसके मसीहा को सौंपा जाना है। तो, वह जॉन पूरी दुनिया पर शासन करने वाले जानवर के एक विषय या सिद्धांत पर चित्रण कर रहा है। और अब, जॉन की कल्पना है कि इसका अनुप्रयोग पहली शताब्दी के रोमन साम्राज्य में होगा या यह स्वयं प्रकट होगा।

तो, रोम तो बस इस सिद्धांत या इस विश्वव्यापी शासन और साम्राज्य की पहली शताब्दी की अभिव्यक्ति है जिसे ईसा मसीह एक दिन आएंगे और हराएंगे। और वह पहले ही आगमन में पराजित हो चुका है, परन्तु एक दिन वह इसे समाप्त कर देगा जब परमेश्वर का राज्य, जब इस पृथ्वी का राज्य शैतान और उसके प्रभुत्व से स्थानांतरित हो जाएगा और अब भगवान और मेरे, यीशु मसीह को हस्तांतरित हो जाएगा। . तो, अतिशयोक्ति जानबूझकर की जा सकती है।

फिर, यह प्रतिबिंबित हो सकता है कि जॉन रोम को केवल पहली शताब्दी की अभिव्यक्ति के रूप में देखता है। ऐसा नहीं है कि जॉन ने क्रमिक साम्राज्यों या समय की अवधि को देखा जैसा कि हम आज देखते हैं, बल्कि बस यह कि रोम इस साम्राज्य की पहली शताब्दी की अभिव्यक्ति थी जो पूरी दुनिया पर शासन करेगा जिसे एक दिन ईसा मसीह अंततः पराजित करने के लिए आएंगे। दूसरा यह कि ध्यान दें कि अध्याय 13 में बार-बार दोहराया गया खंडन दिया गया था।

जानवर को अधिकार दिया गया था. जानवर को यह दिया गया था. यह शायद एक बार फिर इन घटनाओं पर भगवान की संप्रभुता का सुझाव देता है कि भगवान ही वह है जो शैतान और जानवर की गतिविधि पर नियंत्रण रखता है।

कि उसे केवल इस तरह से कार्य करने की अनुमति है। उसे केवल इस तरह से कार्य करने की क्षमता दी गई है। इसलिए, जैसा कि हमने प्रकाशितवाक्य में कहीं और देखा है, प्रकाशितवाक्य में द्वैतवाद नहीं है जहां आपके पास दो शक्तियां एक-दूसरे के विपरीत हैं जब तक कि अंततः भगवान की शक्ति बुराई की शक्ति पर विजय नहीं पा लेती।

लेकिन पहले से ही, भगवान की शक्ति को किसी भी चीज़ को हड़पने या उस पर कब्ज़ा करने के रूप में देखा जाता है। कि उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है. भगवान की तरह कौन है? उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है.

यह जानवर जितना शक्तिशाली प्रतीत होता है, उसमें कोई सच्चा द्वैतवाद नहीं है। ईश्वर स्वयं अभी भी इन घटनाओं पर संप्रभु बना हुआ है, और शैतान को केवल वही करने की अनुमति है जो ईश्वर उसे अपनी संप्रभुता में करने की अनुमति देता है। तो, संक्षेप में कहें तो, पहले जानवर का उद्देश्य संतों की परेशानी का असली कारण प्रदर्शित करना है।

उनके उत्पीड़न और उनकी कठिनाई का असली स्रोत एशिया माइनर के क्षेत्र में रोमन साम्राज्य था। सच्चा स्रोत यह है कि यह राक्षसी रूप से प्रेरित जानवर से आता है जो शैतान का एजेंट है। यह उसी राक्षसी रूप से प्रेरित पशु शक्ति से आता है जो डैनियल अध्याय 7 में पशु साम्राज्यों और अन्य शासकों और साम्राज्यों के पीछे निहित है जो मूर्तिपूजक और ईश्वरविहीन थे और भगवान के लोगों पर अत्याचार करते थे और भगवान के शासन का विरोध करते थे और खुद को दुनिया में पूर्ण शक्ति के रूप में स्थापित करते थे।

वही राक्षसी रूप से प्रेरित शक्ति अब रोम और उसके सम्राट के दावों और पहली शताब्दी में भगवान के लोगों पर अत्याचार करने और उन्हें नष्ट करने के रोम के प्रयासों के पीछे छिपी हुई है। लेकिन जो लोग समझौता करने के लिए प्रलोभित हैं, उनके लिए यह अध्याय दिखाएगा कि दांव पर क्या है और वे किसके साथ समझौता कर रहे हैं। रोमन शासन के साथ समझौता करना कोई तटस्थ बात नहीं है, लेकिन रोमन शासन के साथ समझौता करना अब अंततः स्वयं शैतान के प्रति निष्ठा रखने के रूप में देखा जा रहा है।

अध्याय 12 और 13 को एक साथ पढ़ा जाना है। रोम का प्रतिनिधित्व करने वाला जानवर शैतान के एजेंट से कम नहीं है। तो उन ईसाइयों के लिए जो रोमन साम्राज्य के भीतर अपनी जीवनशैली में समझौता करने और आत्मसंतुष्ट होने के लिए प्रलोभित हैं, रहस्योद्घाटन एक जागृत कॉल है कि वे वास्तव में क्या कर रहे हैं और वास्तव में वे किसके प्रति निष्ठा दे रहे हैं।

रोम के प्रति उनकी निष्ठा और यहां तक कि सम्राट पंथ में स्पष्ट भागीदारी के पीछे, पूजा और निष्ठा है जो वे वास्तव में ड्रैगन को दे रहे हैं, स्वयं शैतान को, अध्याय 10 से। तो इस सब के पीछे अध्याय 12 है। वह शैतान की है यीशु मसीह के व्यक्तित्व को नष्ट करने और उसके लोगों को नष्ट करने का प्रयास।

लेकिन लात मारने वाला शैतान पहले ही हार चुका है। लेकिन ईसाइयों को याद दिलाते हुए कि आपकी लड़ाई मांस और रक्त के खिलाफ नहीं है, बल्कि यह स्वर्गीय क्षेत्रों के शासकों और अधिकारियों के खिलाफ है। और अब उस नए दृष्टिकोण और ज्ञान के साथ, वे न केवल दृढ़ता से अपनी स्थिति का सामना करने में सक्षम हैं, बल्कि अपने वफादार गवाह को बनाए रखने और समझौता करने से इनकार करने और बुतपरस्त रोमन साम्राज्य के दावों के अनुरूप होने से इनकार करने में भी सक्षम हैं।

अब, बहुत, बहुत संक्षेप में, श्लोक 10, 9, और 10 एक अलग चरित्र के हैं। वे पहले जानवर और दूसरे जानवर के बीच एक सम्मिलन की तरह हैं। और यद्यपि कथा को तोड़ते हुए, यदि आप इन छंदों को हटा दें, तो कथा बहुत स्वाभाविक रूप से पहले जानवर से दूसरे जानवर की ओर प्रवाहित होगी।

लेकिन कथा को तोड़ने में, वास्तव में, ये पाठ जो हैं वह विवेक और आज्ञाकारिता का आह्वान है। ध्यान दें, यह शुरू होता है, जिसके पास कान है, वह सुन ले। दूसरे शब्दों में, इसका प्राथमिक अर्थ यह नहीं है, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं; जॉन ये बातें मुख्यतः अपने पाठकों की जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए नहीं कह रहे हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है या अभी क्या हो रहा है।

इसका उद्देश्य अंत समय की घटनाओं के प्रति हमारे जुनून को बढ़ावा देना और यह पता लगाना नहीं है कि एक-दूसरे के साथ हमारे संबंधों में चीजें कब घटित होती हैं। यह छोटा सा सम्मिलन हमें याद दिलाता है कि जॉन इसके आलोक में अपने चर्चों से आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया देने और दृढ़ता से प्रतिक्रिया देने का आह्वान कर रहा है। जिसके कानों की पुनरावृत्ति होती है वह वास्तव में अध्याय दो और तीन से दोहराया गया है।

एक और संकेत यह है कि इसका उद्देश्य अध्याय दो और तीन में चर्च की स्थिति का वर्णन करना है। वहां उनसे कहा जाता है कि जिसके कान हों वह सुन ले. अब वही भाषा यहां भी दोहराई गई है.

इस भाषा में, यदि किसी को गतिविधि में, कैद में, कैद में जाना है, तो वे जाएंगे। यदि उन्हें तलवार से मारना है, तो उन्हें तलवार से मार दिया जाएगा, पुराने नियम की भाषा दर्शाती है। पुनः, यिर्मयाह अध्याय 15 और पद दो, और यिर्मयाह 43 और पद 11।

और इस सब का मुद्दा, हालांकि, यह है कि भगवान, कहने का मतलब है कि भगवान के लोग वास्तव में रोमन साम्राज्य के हाथों उत्पीड़न सहेंगे, लेकिन प्रतिक्रिया सहनशक्ति में से एक होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि अध्याय 13, श्लोक एक से आठ तक, और शेष 13 ने अब स्थिति पर एक सर्वनाशकारी परिप्रेक्ष्य प्रदान किया है। यह अब परमेश्वर के लोगों की प्रतिक्रिया का प्रतीक है।

यह धीरज और उत्पीड़न में से एक है। अब जब उन्हें स्थिति की आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त हो गई है। तो, अध्याय 13, यीशु के दृष्टान्तों की तरह, जो उसके पाठकों की स्थिति का वर्णन करने के प्रतीकात्मक तरीके या रूपक तरीकों के रूप में थे, और यीशु ने उन्हें सुनने के लिए कान रखने के लिए कहा था, अध्याय 13 उन लोगों के लिए जिनके पास कान हैं सुनने के लिए, अध्याय 13 आवश्यक स्थिति में आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है ताकि भगवान के लोग निर्बाध आज्ञाकारिता और धीरज और दृढ़ता से प्रतिक्रिया दे सकें।

लेकिन वे ऐसा केवल इसलिए कर सकते हैं क्योंकि अब उन्होंने रोम की वास्तविक प्रकृति और उनके संघर्ष की वास्तविक प्रकृति को समझ लिया है। यह हमें जानवर नंबर दो पर लाता है। मैं एक बार फिर आपको सुझाव दूंगा कि आयत 11 से 17 में जानवर नंबर दो उन घटनाओं की श्रृंखला का वर्णन नहीं कर रहा है जो जानवर नंबर एक में एक से आठ के बाद अस्थायी रूप से घटित होती हैं।

लेकिन बीस्ट नंबर दो श्लोक एक से आठ तक में बीस्ट नंबर एक के आसपास की घटनाओं के समान अवधि और समान घटनाओं को संदर्भित करता है और कवर करता है। तो इस प्रकार जानवर नंबर एक की गतिविधि कैसे संचालित होती है? यह जानवर नंबर दो के माध्यम से है। तो यह सब एक साथ रखने पर, अध्याय 13 उन्हीं घटनाओं का वर्णन करता प्रतीत होता है जो अध्याय 12 के अंत में होती हैं जिसमें अजगर महिला और उसकी संतान के पीछे जाता है।

वह उसके द्वारा कैसे किया जाता है? जानवर नंबर एक के माध्यम से. लेकिन जानवर नंबर एक, जानवर नंबर दो के माध्यम से अपनी गतिविधि कैसे करता है? सभी कनेक्शनों पर ध्यान दें: पहला जानवर अब स्पष्ट रूप से जानवर नंबर दो को अपनी ओर से बोलने का अधिकार देता है।

पद 12 में, वह अपनी ओर से पहले जानवर के अधिकार का प्रयोग करता है। तो पहला जानवर जानवर नंबर दो के माध्यम से पूरी पृथ्वी पर अधिकार कैसे प्रदर्शित करता है? और इसलिए हम इस बारे में थोड़ी बात करेंगे कि यह क्या, कौन हो सकता है? जानवर नंबर दो कौन है? वह इस

जानवर के माध्यम से अपने मूर्तिपूजक उत्पीड़न अधिकार को कैसे कार्यान्वित करता है? इस जानवर की दो महत्वपूर्ण विशेषताएं

: नंबर एक, ध्यान दें कि वह एक ड्रैगन की तरह बोलता है, जो स्पष्ट रूप से उसे अध्याय एक में ड्रैगन से जोड़ता है। और वह भी, जैसा कि हमने देखा है, जानवर के साथ जुड़ा हुआ है क्योंकि ध्यान देने योग्य दूसरी बात यह है कि वह अपनी ओर से पहले जानवर के अधिकार का प्रयोग करता है। अब सवाल यह है कि जानवर नंबर दो कौन है? यदि जानवर नंबर एक, अगर हम कहते हैं कि यह रोमन साम्राज्य है और शायद सम्राट स्वयं पहले जानवर का प्रतिनिधित्व करता है जो पूरी पृथ्वी पर शासन करता है और जो संतों पर युद्ध करता है, तो जानवर नंबर दो कौन है? मैं आपको सुझाव दूंगा कि जानवर नंबर दो वह विशिष्ट साधन है जिसके द्वारा रोम के प्रांतों में रहने वाले प्रकाशितवाक्य के पाठक, एशिया माइनर में रहते हैं, जानवर नंबर दो वह विशिष्ट साधन है जिसके द्वारा वे अधिकार और उत्पीड़न का अनुभव करेंगे रोम का जानवर नंबर एक या सम्राट।

अर्थात्, एशिया माइनर और अध्याय दो और तीन में आपको जिन सात शहरों से परिचित कराया गया है, उनमें रहने वाले पाठक शैतान और पहले जानवर के उत्पीड़क अधिकार का अनुभव कैसे करते हैं? यह जानवर नंबर दो के माध्यम से है। इसलिए मैं आपको सुझाव दूंगा कि पशु संख्या दो, बहुत अधिक विशिष्ट हुए बिना, पशु संख्या दो संभवतः एशिया माइनर के प्रांतों में नेताओं और आधिकारिक अधिकारियों का प्रतिनिधित्व कर सकता है जो सम्राट पूजा जैसी चीजों को लागू करने के लिए जिम्मेदार हैं। सम्राट ने रोम और सम्राट के प्रति निष्ठा लागू करने और ऐसा न करने पर परिणाम भुगतने का आह्वान किया। दरअसल, इस पाठ में दिलचस्प चीजों में से एक, आप में से जो लोग ग्रीक जानते हैं या ग्रीक पढ़ते हैं, वह इस खंड में छंद 11 में है, और इसके बाद, हम लेखक को क्रियाओं का एक तनावपूर्ण रूप चुनते हुए पाते हैं जो आपको इसमें नहीं मिलता है अध्याय 13 का पहला भाग।

वह एक काल रूप, एक वर्तमान काल चुनता है, जिसका अर्थ अत्यधिक वर्णनात्मक या अग्रगामी होना है। और मुझे लगता है कि वह ऐसा इसलिए करता है, क्योंकि यहीं पर अध्याय 12 और 13 एशिया माइनर में रहने वाले पाठकों को प्रभावित और प्रभावित करेंगे। इस तरह से शैतान का अधिकार, इस तरह से पहले जानवर का अधिकार उन नेताओं और अधिकारियों और एशिया माइनर के प्रांतों और उन शहरों के माध्यम से एशिया माइनर में पाठकों तक पहुंचेगा जो निष्ठा और पूजा को लागू करने के लिए जिम्मेदार हैं। रोम और सम्राट के।

और फिर, ऐसा करने में विफल रहने पर उन्हें किसी एक विशिष्ट व्यक्ति या लोगों के समूह से जोड़े बिना ही परिणाम भुगतना होगा। अन्यत्र, इस व्यक्ति को झूठा भविष्यवक्ता कहा जाएगा। उदाहरण के लिए, बाद में अध्याय 14 में, अध्याय 20 में श्लोक 12 में, इस दूसरे जानवर, अपवित्र त्रिमूर्ति के तीसरे सदस्य को झूठा भविष्यवक्ता कहा जाएगा।

मैं उस पर वापस लौटना चाहता हूं। लेकिन यहां जो दिलचस्प है वह यह है कि इसमें वर्णन बहुत कम है। उन्होंने बस इतना कहा कि अजगर की तरह बात करो और मेमने की तरह दो सींग रखो।

लेकिन जो अधिक महत्वपूर्ण है वह यह है कि यह जानवर क्या करता है। उदाहरण के लिए, वह लोगों से पहले जानवर की पूजा करवाता है, जो, जैसा कि हमने कहा, एशिया माइनर के शहरों में सम्राट की पूजा का संकेत हो सकता है; उनमें से अधिकांश के पास मूर्तियाँ थीं, या उनमें से अधिकांश के पास मंदिर थे, न केवल विदेशी देवताओं के, बल्कि उनमें से अधिकांश के पास सम्राट के सम्मान में मंदिर थे। इन शाही मंदिरों में सम्राट की पूजा होती थी। उनमें से कई के पास मंदिर के ऐसे लोग और वार्डन थे जो यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार थे कि मंदिर की पूजा देखी और बनाए रखी जाए।

लेकिन एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि श्लोक 13 से 15 में, यह जानवर विभिन्न माध्यमों से लोगों को पहले जानवर की पूजा करने के लिए धोखा देने में सक्षम है जिसे हम देखेंगे। यह जानवर लोगों को जानवर की पूजा करने के लिए धोखा देने में सक्षम है। नंबर एक, उदाहरण के लिए, आग स्वर्ग से नीचे आती है, और इसे समर्थन देने के लिए, लोगों को धोखा देने और लोगों से जानवर की पूजा करवाने की इस भाषा पर ध्यान दें।

नंबर एक न केवल अध्याय 13 के पहले भाग तक बल्कि अध्याय 12 तक भी जाता है। ध्यान दें कि शैतान को अध्याय 12 के छंद नौ में प्राचीन सर्प, शैतान शैतान के रूप में वर्णित किया गया था, जो पूरी दुनिया को भटकाता है या जो पूरी दुनिया को धोखा देता है। दुनिया। अब उसकी भ्रामक गतिविधि, शैतान की भ्रामक गतिविधि जानवर नंबर एक द्वारा की जाती है, लेकिन अब विशेष रूप से पाठकों के बीच जानवर नंबर दो द्वारा की जाती है, जो लोगों को पहले जानवर, रोम और शायद उसके सम्राट का भी अनुसरण करने और उसकी पूजा करने के लिए धोखा देने में सक्षम है।

दो दिलचस्प संकेत हैं जो वह प्रदर्शित करता है। एक तो स्वर्ग से नीचे आने वाली आग है। दूसरी बात यह है कि वह बनाई गई छवि में जान डालने में सक्षम है।

मैं विशेष रूप से और वस्तुतः कुछ घटनाओं की पहचान करने की कोशिश करने में थोड़ा मितभाषी हूँ जो इससे मिलती-जुलती होंगी। उदाहरण के लिए, क्या यह पहली सदी के रोम के जादूगरों का संदर्भ है जो वास्तव में ऐसा कुछ कर सकते थे? क्या यह वेंट्रिलोकिज़्म का उदाहरण है कि कुछ लोगों ने एक छवि बनाने की क्षमता का सुझाव दिया है जैसे कि वह बोल सकती है? यह संभव है कि इसके पीछे यही छिपा हो, लेकिन मुझे लगता है कि आग की ये दो छवियां स्वर्ग से नीचे आ रही हैं और छवि को बोलने की क्षमता दे रही हैं, ये एक बार फिर रोमन साम्राज्य की भ्रामक शक्ति पर जोर देने के तरीके हैं, और वे संभवतः दो पुराने पर आधारित हैं वसीयतनामा ग्रंथ। उदाहरण के लिए, स्वर्ग से नीचे आने वाली आग एलिय्याह को बाल के नबियों के साथ संघर्ष में स्वर्ग से आग नीचे बुला सकती है।

क्या यह संभव है कि यह रोमन साम्राज्य में वास्तविक संकेतों को संदर्भित करता है? यह बोधगम्य है। यदि आपको याद हो, निर्गमन में, जादूगर अधिकांश चिन्हों और चमत्कारी विपत्तियों को दोहराने में सक्षम थे जो मूसा ने मिस्र पर बरसाई थीं। लेकिन इसके अलावा, मुझे लगता है कि यह मुख्य रूप से स्वर्ग से नीचे आने वाली आग की पुराने नियम की भाषा पर आधारित है,

जिसका उद्देश्य केवल रोमन साम्राज्य की अपनी शक्ति के माध्यम से धोखा देने की क्षमता का प्रतीक है।

उस छवि के बारे में क्या जो बोल सकती है? अधिक संभावना है, छवि, जैसा कि हमने देखा, छवि संभवतः डैनियल अध्याय तीन के एक अन्य पुराने नियम के पाठ पर वापस जाती है, जहां नबूकदनेस्सर ने अपनी एक छवि स्थापित की है। यह छवि नबूकदनेस्सर और पूरे राज्य पर उसके शासन और अधिकार का प्रतिनिधित्व करने के लिए थी। और इसलिए यहां की छवि उन छवियों और मूर्तियों और मंदिरों का प्रतिनिधित्व कर सकती है जो आपको एशिया माइनर के अधिकांश शहरों में रोम और साम्राज्य और पूरे साम्राज्य में सम्राट के शासन का प्रतिनिधित्व और प्रतिबिंबित करने के रूप में मिलेंगे, जैसे कि एशिया के शहरों में। नाबालिग।

लेकिन छवि को बोलने की शक्ति देने में सक्षम होना, शायद इसे बहुत शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए, लेकिन एक बार फिर यह रोम की धोखा देने की शक्ति का प्रतीक है, रोम की अपने नागरिकों, उसके निवासियों को रोम के प्रति निष्ठा और पूजा करने के लिए धोखा देने की शक्ति का प्रतीक है। अपने आप। जानवर की भ्रामक गतिविधि के बारे में ध्यान देने योग्य एक और बात यह है कि हम पहले ही इस तथ्य पर ध्यान दे चुके हैं कि जानवर, नंबर दो, धोखा देने में सक्षम है, शैतान की भ्रामक गतिविधि को याद करता है, जो सृष्टि की ओर जाता है, उत्पत्ति का अध्याय तीन, जहां वह आदम और हव्वा को धोखा देता है। और अब, प्रकाशितवाक्य के अध्याय 12 और श्लोक नौ में, वह पूरी दुनिया को गुमराह करता है या पूरी दुनिया को धोखा देता है।

तो जानवर स्पष्ट रूप से वह तरीका है जिससे शैतान अपना काम जारी रखता है और अपनी संतानों, जानवर नंबर दो में अपनी भ्रामक गतिविधियों को अंजाम देता है। हालांकि, मुझे आश्चर्य है कि जानवर की भ्रामक गतिविधि की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह भी हो सकती है कि यह भी एक कारण हो सकता है कि उसे झूठा भविष्यवक्ता क्यों कहा जाता है। जब आप प्रकाशितवाक्य के अध्याय दो और तीन, सात चर्चों को संदेश, पर वापस जाते हैं, तो आप ध्यान देते हैं कि कई चर्चों में झूठे शिक्षक या झूठे भविष्यवक्ता, भविष्यवक्ता हैं जिनके साथ जॉन संघर्ष और असहमति में प्रतीत होता है, भविष्यवक्ता ऐसे व्यक्ति या झूठे शिक्षक जिनका काम ईसाइयों को रोमन साम्राज्य, अधर्मी, दमनकारी, मूर्तिपूजक रोम के साथ समझौता करने के लिए धोखा देना प्रतीत होता है।

उदाहरण के लिए, अध्याय दो और श्लोक 14 में, पेरगामम में चर्च को संदेश में, वह कहता है, फिर भी, मेरे पास आपके खिलाफ कुछ बातें हैं। तुम्हारे पास ऐसे लोग हैं जो बिलाम की शिक्षा को मानते हैं, जिसने बालाक को इस्राएलियों को लुभाने या भोजन खाने, मूर्तियों को बलि चढ़ाने और यौन अनैतिकता करने के द्वारा इस्राएलियों को पाप करने के लिए धोखा देने की शिक्षा दी थी। फिर 15, वह कहते हैं, इसी तरह, आपके पास ऐसे लोग हैं जो निकोलाईट्स की शिक्षा को मानते हैं, जो शायद लोगों को बुतपरस्त शासन के साथ समझौता करना भी सिखा रहे हैं।

अध्याय दो और पद 20, थुआतीरा की कलीसिया के लिए संदेश, फिर भी, मेरे पास आपके विरुद्ध यह है। तू उस स्त्री इजेबेल को सहन करता है जो अपने आप को भविष्यवक्ता कहती है; अब झूठी नबी से दिलचस्प कनेक्शन, खुद को कहती है नबी और यहाँ वह क्या करती है।

वह अपने उपदेश से मेरे सेवकों को व्यभिचार के लिये बहकाती या धोखा देती है। तो, मुझे आश्चर्य है कि क्या यह जानवर नंबर दो की पहचान करने में एक और कारक है। यह न केवल रोमन साम्राज्य और सम्राट पंथ और इस तरह की चीजों के पीछे धोखे का स्रोत है, और ध्यान दें कि यह समझना महत्वपूर्ण है कि जानवर केवल ईसाइयों को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को धोखा देने में सक्षम है।

पूरी दुनिया को धोखा दिया गया है। लेकिन दूसरी ओर, मुझे आश्चर्य है कि क्या यहां जानवर और चर्चों में मौजूद लोगों के बीच कोई संबंध नहीं है, जैसे कि यह महिला जिसे वह इज़ेबेल और निकोलाईटन कहता है और जो बिलाम की शिक्षा मानते हैं, जो चर्च को धोखा दे रहे हैं और इज़ेबेल पैगंबर, जो अब बुतपरस्त रोम के साथ समझौता करके चर्च को धोखा दे रहे हैं और रोम को निष्ठा और पूजा दे रहे हैं। तो झूठा शिक्षक, झूठा भविष्यवक्ता, अध्याय दो और तीन के पाठकों को अलग-अलग तरीके से प्रभावित करने वाला है, यह इस पर निर्भर करता है कि क्या वे विरोध कर रहे हैं या क्या उन्हें इन झूठे शिक्षकों के आगे झुकने और उनका अनुसरण करने का खतरा है।

जॉन अब हमें इस भ्रामक शिक्षा और भविष्यवाणी और चर्च में झूठी शिक्षा के साथ-साथ व्यापक दुनिया में भ्रामक गतिविधि के पीछे का सच्चा स्रोत दिखा रहा है। अब, आखिरी चीज़ जो जानवर करता है वह छंद 16 और 17 में है, जानवर आर्थिक प्रतिबंध लगाने में सक्षम है, विशेष रूप से भगवान के लोगों पर, लेकिन रोम के जानवर के प्रति निष्ठा और पूजा करने से इनकार करने के लिए पूरी दुनिया पर। और वाणिज्य में संलग्न होने के लिए उसके सम्राट। जाहिर है, इन छंदों के अनुसार, यह आवश्यक है कि उन्हें एक निशान मिले।

अब, रहस्योद्घाटन के व्यापक संदर्भ में, यहाँ जो चिह्न उन्हें अपने माथे पर मिलता है वह स्पष्ट रूप से उस चिह्न या मुहर की नकल है जिसे 144,000 पूरे चर्च का प्रतीक मानते हैं, भगवान के लोग इसे अपने माथे पर भी प्राप्त करते हैं। और इसलिए, यह निशान संभवतः पहचान और अपनेपन का प्रतिनिधित्व करने के लिए है, जो कि आपके पास मौजूद निशान है। उदाहरण के लिए, यह निशान वस्तुतः पहली शताब्दी में किसी दास की पहचान और संबंध दर्शाने वाले ब्रांड या निशान का प्रतिनिधित्व कर सकता था।

प्रकाशितवाक्य चार में, मुझे खेद है, प्रकाशितवाक्य सात में, यह चिह्न संरक्षण या संरक्षण का भी संकेत देता है, लेकिन पहचान और संबद्धता का भी। तो यह एक शाब्दिक चिह्न होने के बजाय जो इन लोगों के पास वास्तव में होना चाहिए या किसी प्रकार का शाब्दिक चिह्न जो हो सकता था, मुझे नहीं पता, लेकिन कम से कम रहस्योद्घाटन प्रवचन में, इसे बहुत शाब्दिक रूप से लेने के बजाय, यह संभवतः एक प्रतीक है पहचान और अपनेपन की। जो लोग रोम से जुड़े हैं, जो लोग रोम और सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित करते हैं, उन्हें अब वाणिज्य में संलग्न होने की अनुमति है, खरीदने और बेचने की अनुमति है, जिसे हमने अध्याय छह में देखा था।

यह आवश्यक रूप से अच्छी बात नहीं थी कि हमने रोम के वाणिज्यिक और आर्थिक जीवन की एक तस्वीर देखी, जो उन पर भगवान के फैसले के हिस्से के रूप में उलटी और अराजकता,

असंतुलित, दमनकारी और अन्यायपूर्ण थी। लेकिन यहां, रोम के प्रति उनकी निष्ठा प्रदर्शित करने के माध्यम से, शायद सम्राट पंथ में शामिल होने के माध्यम से, रोम से उनका जुड़ाव अब उन्हें मिलने वाला चिह्न है, जो उन्हें वाणिज्य में भाग लेने की अनुमति देता है। पहली शताब्दी में यह बात उन लोगों के मन में रही होगी, याद रखें, उन कुछ चर्चों के संबंध में जिनके बारे में हमने प्रकाशितवाक्य अध्याय दो और तीन में बात की थी, ऐसे लोग थे जो अपने काम के हिस्से के रूप में रहे होंगे, व्यापार संघों में शामिल होने की आवश्यकता होगी।

अक्सर, उन व्यापार संघों के संरक्षक देवता होते थे, लेकिन वे भी उन्हीं के होते थे; अपने व्यवसाय में सफलता सुनिश्चित करने के लिए, आप इन व्यापारिक संघों से जुड़े होंगे। उनसे संबंधित होने का मतलब यह होगा कि, कुछ अवसरों पर, आपको ऐसी गतिविधियों में शामिल होने की आवश्यकता होगी जो न केवल देवताओं बल्कि सम्राट के प्रति भी पूजा और निष्ठा और कृतज्ञता प्रदर्शित करेगी। अर्थात्, व्यापार संघ और वाणिज्य सम्राट पंथ के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए होंगे।

और हमने कई बार कहा है कि पहली सदी के रोम में, वाणिज्य और राजनीति और धर्म के बीच संबंध को उजागर करना असंभव था। तो वाणिज्य का हिस्सा, व्यापार गिल्ड से संबंधित होने का हिस्सा, वाणिज्य और व्यापार में संलग्न होने का हिस्सा और पहली शताब्दी के रोमन साम्राज्य में और एशिया माइनर के चर्चों और शहरों में काम करने का मतलब बुतपरस्त देवताओं की पूजा में शामिल होना होगा और मूर्तिपूजक सम्राट पंथ में भी। तो यहाँ तस्वीर आर्थिक परिणामों को स्वीकार करने या भुगतने के दबाव की होगी।

शायद इसीलिए स्मिर्ना को गरीब और लौदीकिया को अमीर बताया गया है। स्मिर्ना ने समझौता करने से इनकार कर दिया और सम्राट पूजा की अपनी धार्मिक प्रणाली के माध्यम से बुतपरस्त रोमन साम्राज्य के साथ समझौता करने से इनकार कर दिया। उन्होंने समझौता करने से इनकार कर दिया और अब इसका परिणाम भुगत रहे हैं।'

इसलिए उन्हें गरीब और कम प्रतिष्ठा वाला बताया गया है, जबकि लौदीकिया एक बहुत अमीर शहर है, जो संभवतः समझौता करने की उनकी इच्छा का संकेत देता है। उसके परिणामस्वरूप, वे आत्मसंतुष्ट हो गए हैं। तो अब तक बात यह है कि जॉन उस सच्चे संघर्ष का खुलासा कर रहा है जिसका एशिया माइनर में चर्च सामना कर रहे हैं, और वह शैतान का है, रोम का शैतानी-प्रेरित प्रयास भगवान के लोगों को समझौता करने, पूजा करने और निष्ठा देने के द्वारा धोखा देने का है। जानवर और यहां तक कि वाणिज्य के संदर्भ में और अपने व्यापार को चलाने के संबंध में समझौता किया जा रहा है और व्यापार संघों के संबंध में अब अवसरों में शामिल होकर समझौता करने का प्रलोभन दिया जा रहा है और रोम और रोम के प्रति निष्ठा दिखाने के लिए अवसरों और समय के अनुरूप होने के लिए मजबूर किया जा रहा है। जानवर, रोमन साम्राज्य के लिए।

और अब जॉन उन्हें याद दिलाता है कि इस सब के पीछे, अध्याय 12 तक, भगवान के लोगों पर अत्याचार करने और उन्हें नष्ट करने का शैतान का प्रयास निहित है। अध्याय 13 उन्हें स्थिति में आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है ताकि उनके पास दृढ़ रहने और सहन करने और बुतपरस्त

रोमन साम्राज्य के साथ समझौता करने का विरोध करने के लिए आवश्यक शक्ति हो। अब, हम प्रकाशितवाक्य 13 को अंत में जानवर के निशान के बारे में कुछ कहे बिना नहीं छोड़ सकते।

विशेषकर श्लोक 18 में बात यह है कि इसके लिए बुद्धि की आवश्यकता है। यदि किसी के पास समझ हो, तो वह उस पशु की गिनती गिन ले। जानवर की संख्या 666, 666 है।

लेकिन महत्वपूर्ण बिंदु, सबसे पहले, इसे इस व्यापक संदर्भ में रखना है, श्लोक 18 है: अध्याय 13 श्लोक 18 के साथ समाप्त होता है, जो विवेक और अंतर्दृष्टि के लिए एक और आह्वान है। तो यह मुख्य रूप से यह गणना करने का प्रयास करने के लिए नहीं है कि जानवर कौन हो सकता है या अंत समय का एंटीक्रिस्ट कौन हो सकता है या हम अंत के कितने करीब हैं। वह बात नहीं है।

ज्ञान रखने की यह भाषा इस संदर्भ में है कि जिसके पास कान हो, वह सुन ले। अर्थात्, यह ज्ञान का आह्वान है ताकि वे अपनी स्थिति के बारे में सच्ची समझ और अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकें। और यहां उन्हें इस जानवर की संख्या के बारे में ज्ञान रखने के लिए कहा जाता है, जो जाहिर तौर पर उसके नाम से जुड़ा हुआ है।

यह तो दिलचस्प है। आयत 17 में, निशान जानवर का नाम या उसके नाम की संख्या है। और अब मानव, यह श्लोक 18 में है, इसे मनुष्य की संख्या या मानव संख्या कहा जाता है जिसकी उन्हें गणना करनी है, जो कि संख्या 666 है।

लेकिन सबसे पहले, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि यह उनकी स्थिति में विवेक और ज्ञान का आह्वान है ताकि वे प्रतिक्रिया दे सकें ताकि पूजा की मूर्तिपूजा प्रणाली का विरोध कर सकें जिसके लिए उन्हें मजबूर किया जा रहा है। सबसे पहले, फिर से, यह पहचानने के लिए कि नाम का यह संदर्भ यह कहकर कि यह चिह्न जो उन्हें प्राप्त होने वाला है वह जानवर का नाम है। इसका उद्देश्य जानबूझकर भगवान के नाम के उल्लेख या प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ईसाइयों पर लिखे जाने वाले नाम के विपरीत है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, अध्याय 2 और पद 17 और अध्याय 3 और पद 12 में, उन ग्रंथों में विजेताओं के लिए किए गए वादे का एक हिस्सा यह है कि उनके पास नाम, पिता का नाम, या नए यरूशलेम का नाम होगा उन पर लिखा है। अध्याय 14 श्लोक 1 में, फिर मैं ने दृष्टि की, और मेरे साम्हने सिय्योन पर्वत पर एक मेम्रा खड़ा है, और उसके 1,44,000 जन भी हैं, जिनके माथे पर उसका नाम और पिता का नाम लिखा हुआ है। और अध्याय 22, पद 4, नए यरूशलेम दर्शन के अंतिम खंड में, पुस्तक के बिल्कुल अंत में, पद 4 में, परमेश्वर के लोगों का वर्णन करते हुए, वे उसका चेहरा देखेंगे, और उसका नाम उनके माथे पर होगा।

इसलिए जिन लोगों को व्यापार में संलग्न होने की अनुमति है, उनके चेहरे पर लिखे गए जानवर के नाम का अर्थ प्रकाशितवाक्य में अन्य स्थानों के सीधे विपरीत है जहां एक नाम, मसीह का नाम, या पिता का नाम, भगवान के माथे पर लिखा गया है। लोग। तो, संभवतः, इसे प्रतीकात्मक रूप से फिर से लिया जाना चाहिए और पहचान और संबंधित या निष्ठा और सहयोग को इंगित करना चाहिए, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई किसका नाम रखता है। लेकिन यह 666 क्या है

जिससे इस नाम की पहचान की जाती है? और कठिनाई का एक हिस्सा, मुझे आश्चर्य है कि उन्हें इस स्थिति को समझने के लिए क्यों बुलाया जाता है, मुझे आश्चर्य है कि क्या इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि जानवर धोखे से काम करता है, जानवर की गतिविधि की भ्रामक प्रकृति के कारण, इसके लिए पाठकों से अंतर्दृष्टि और विवेक की आवश्यकता है।

और इसलिए अब उन्हें ज्ञान रखने के लिए बुलाया गया है कि मूर्तिपूजा की भ्रामक प्रकृति के कारण, जो कुछ दांव पर लगा है, उसके लिए यह आवश्यक है कि उनके पास इसका विरोध करने के लिए और न होने के लिए स्थिति में बुद्धि और अंतर्दृष्टि और विवेक हो। इसमें चूसा और अनुरूप करने के लिए। लेकिन यह संख्या 666 क्या है? इस पाठ के बारे में हम बहुत सी बातें कह सकते हैं, लेकिन मैं उस पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ जो ज्यादातर लोगों का ध्यान खींचती है। और वह संख्या है 666.

संभवतः, अधिकांश लोगों के अनुसार, यह पहली शताब्दी में जेमट्रिया कहलाने वाली आम धारणा को दर्शाता है। वह एक प्राचीन प्रथा थी जो वर्णमाला के अक्षरों को संख्याओं से जोड़ती थी। और क्या होगा कि आप किसी व्यक्ति का नाम या किसी चीज़ का नाम लेंगे, प्रत्येक अक्षर का संख्यात्मक मान लेंगे जिसे समझा और मान लिया गया होगा, और संख्या प्राप्त करने के लिए उन सभी को जोड़ देंगे।

और इसलिए, संख्या एक कोड या नाम का संकेत होगी। और इसके बहुत सारे उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए, ग्रीक में जीसस नाम, ग्रीक में आईसस, यदि आप ग्रीक में जीसस, आईसस के प्रत्येक अक्षर का अनुमानित संख्यात्मक मान लेते हैं, तो इसका योग 888 या 888 होता है।

कुछ लोगों ने तो यहां तक कहा है कि यह यहां क्या हो रहा है, इसकी जानकारी देता है। बी666 का अर्थ यीशु के नाम, 888 की एक प्रकार की पैरोडी है। यह संभव है।

लेकिन यह दिलचस्प है कि लेखक के ज्ञान के आह्वान को आमतौर पर यहां नजरअंदाज कर दिया गया है। और इसलिए 666, सभी प्रकार की अटकलों का विषय रहा है। और कभी-कभी संख्या 666 को ऐतिहासिक व्यक्तियों से जोड़ा गया है।

उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में, संख्या 666 अक्सर स्वयं राष्ट्रपतियों से जुड़ी रही है। संयुक्त राज्य अमेरिका के बाहर, संख्या 666 अन्य दुष्ट शासकों, जैसे सद्दाम हुसैन, एडॉल्फ हिटलर, या यहाँ तक कि कई बार सुधार के दौरान पोप के साथ भी जुड़ी रही है। 666 का उपयोग रोमन कैथोलिक चर्च में कुछ पोपों के साथ जुड़ने के लिए किया गया है।

666 को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के अन्य प्रयास भी किए गए हैं। मैंने देखा है, व्यक्तिगत रूप से, जब से मैं इस पर ध्यान दे रहा हूँ, और अन्य उदाहरण भी हो सकते हैं, लेकिन व्यक्तिगत रूप से मैंने आपके द्वारा खरीदी जाने वाली वस्तुओं पर बारकोड इंगित करने से लेकर क्रेडिट कार्ड से लेकर कंप्यूटर चिप्स तक 666 बार देखा है, जिसके बारे में लोग सोचते हैं कि ऐसा होगा एक दिन हम पर और उस जैसी चीज़ों पर नज़र रखने के लिए हमारे अग्रबाहुओं या हमारी

खोपड़ी में जड़ दिया जाएगा। इसके अलावा, आप अक्सर संख्या 666 को लोगों के कार्य करने के तरीके को प्रेरित करते हुए देखते हैं, लगभग कभी-कभी बिना सोचे समझे।

उदाहरण के लिए, मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जिन्होंने जानबूझकर लाइसेंस प्लेट वापस कर दी है, भले ही इसके लिए उन्हें अधिक पैसा खर्च करना पड़ा हो। उन्होंने लाइसेंस प्लेटें वापस कर दी हैं क्योंकि उनमें नंबर 666 था। या उन्होंने अपना फ़ोन नंबर बदल दिया है क्योंकि उसमें 666 था।

मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसने बिल का भुगतान करने से इनकार कर दिया क्योंकि बिल \$6.66 के रूप में वापस आया। तो, संख्या 666 हमारे चीजों को देखने के तरीके और यहां तक कि वास्तविकता की व्याख्या करने के तरीके को प्रभावित करती है और इसमें भूमिका निभाती है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप दो महत्वपूर्ण सिद्धांत याद रखें। सबसे पहले, रहस्योद्घाटन की साहित्यिक शैली और उससे निकलने वाले व्याख्यात्मक सिद्धांतों की हमारी चर्चा से, सबसे पहले जॉन के पाठक इसे समझने में सक्षम होंगे।

मुझे विश्वास है कि जॉन के पाठकों के लिए यह कोई रहस्य नहीं था। यह ज्ञान की पुकार थी, और संख्या की गणना करने की यह पुकार कुछ ऐसा है जो वे कर सकते थे। तो, समस्या यह है कि 2,000 साल बाद, हम ही अंधेरे में हैं, और हम इसे समझने की कोशिश कर रहे हैं।

लेकिन सबसे पहले, जॉन के पाठकों को इसका अर्थ समझ में आ गया होगा और हो सकता है। दूसरा, उससे संबंधित सबसे महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक सिद्धांतों में से एक है जिसे हमने देखा कि प्रकाशितवाक्य की कोई भी व्याख्या प्रशंसनीय और सम्मोहक होनी चाहिए जिसे जॉन समझ सके और उसके पाठक समझ सकें या जॉन का इरादा हो और उसके पाठक जीवित रहें पहली शताब्दी में ग्रीको-रोमन साम्राज्य में एक पूर्व-तकनीकी, पूर्व-उपभोक्ता युग, पूर्व-आधुनिक युद्ध युग, पूर्व-परमाणु युग, कुछ ऐसा जिसे वे समझ सकते थे और समझ सकते थे। मेरे दिमाग में, यह 666 के लिए कई संभावित स्पष्टीकरणों को खारिज करता है जो सदी के दौरान प्रस्तावित किए गए हैं, विशेष रूप से आज, विशेष रूप से वे जो हमारे समय की आधुनिक तकनीकी विशेषताओं या युद्ध के आधुनिक तरीकों और बारकोड और कंप्यूटर जैसी चीजों से जुड़े हैं। और इस तरह की चीजें, यह सिद्धांत है कि इस प्रकार के स्पष्टीकरणों को तुरंत खारिज कर दिया जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि इसे एक आदमी की संख्या के रूप में वर्णित किया गया है। यहां थोड़ी कठिनाई है। क्या इसका मतलब मानव संख्या है, या फिर भी, मुझे यकीन नहीं है कि इसका क्या मतलब होगा?

एंजेलिक संख्या या उसके जैसी किसी चीज़ के विपरीत एक मानव संख्या क्या होगी? या जब वह कहता है कि यह संख्या है, या हम इसे एक आदमी की संख्या के रूप में ले सकते हैं, तो यह एक व्यक्ति के संदर्भ में है। श्लोक 17 निश्चित रूप से इस बात को स्वीकार कर सकता है जब वह कहता है कि कोई भी तब तक खरीद और बिक्री नहीं कर सकता जब तक कि उसे निशान न मिल जाए, जो कि जानवर का नाम या उसके नाम की संख्या है। तो श्लोक 17 लगभग सुझाव या आवश्यकता देता है कि संख्या का जानवर से ही कुछ संदर्भ या संबंध हो।

और इससे सीधा सवाल उठता है कि वह कौन सा व्यक्ति हो सकता है? इस वजह से, अब तक की सबसे आम व्याख्या यह है कि जानवर संख्या नीरो के नाम से जुड़ी है। यह सबसे आम व्याख्या है। और यह निश्चित रूप से समझ में आएगा।

इससे यह पता नहीं चलता कि प्रकाशितवाक्य नीरो के समय में लिखा गया था। यह बस हो सकता है कि नीरो के शासन की प्रकृति और उसके साथ अक्सर जुड़ी बुराई को देखते हुए, यहां तक कि पहली शताब्दी में ईसाइयों के उसके प्रति दृष्टिकोण के बाहर भी, नीरो लगभग एक दुष्ट सम्राट के लिए एक मॉडल या लगभग एक प्रकार का बन गया होगा। आने के लिए या किसी अन्य सम्राट के लिए। तो यहाँ नीरो, नीरो के संदर्भ के रूप में 666 का उपयोग करके, विचार यह नहीं है कि लेखक वस्तुतः नीरो का उल्लेख कर रहा है, बल्कि यह कि लगभग नीरो की आत्मा, नीरो की बुराई, अब एक बार फिर रोमन सम्राट में सन्निहित है अब पहली सदी के ईसाई उस समय का सामना कर रहे हैं जब जॉन लिख रहे हैं।

तो वही ईश्वरविहीन दुष्ट आत्मा जिसने नीरो और उसके सम्राट को अवतरित किया, नीरो बुराई के लिए एक आदर्श था, अब वर्तमान सम्राट में निवास कर रहा है और सामने आ रहा है, जो कि डोमिनियन होगा यदि रहस्योद्घाटन की तारीख का सबसे आम दृष्टिकोण स्वीकार किया जाता है। हालाँकि, समस्या नीरो के नाम को बिल्कुल 666 के साथ जोड़ने से आती है। और जैसा कि अधिकांश लोग जानते हैं, यह वास्तव में ग्रीक के साथ नहीं किया जा सकता है।

लेकिन अधिकांश लोगों ने नीरो के नाम को हिब्रू में लिखे जाने के तरीके से जोड़ने का प्रयास किया है। लेकिन वहां भी, एक समस्या है क्योंकि नीरो का नाम, यहां तक कि हिब्रू में भी, केवल 666 तक ही जुड़ सकता है यदि इसे सामान्य तरीके से नहीं लिखा गया है, बल्कि दुर्लभ तरीके से लिखा गया है। यानी, फिर से, क्या आप देख रहे हैं कि मैं कहाँ जा रहा हूँ? ग्रीक में नीरो को 666 के साथ जोड़ने का एकमात्र तरीका यह मान लेना है कि यह नीरो की वर्तनी को दर्शाता है, न कि केवल नीरो को, हिब्रू में नीरो सीज़र को, और फिर उसकी एक दुर्लभ वर्तनी को दर्शाता है।

तो समस्या यह है कि, आपको मान लेना होगा, और 666 तक पहुंचने का यही एकमात्र तरीका है। तो समस्या यह है कि आपको दो बातें माननी होंगी। नंबर एक, पाठकों के पास होगा, और उनमें से कई लोग हिब्रू समझते होंगे।

नंबर दो, वे हिब्रू में नीरो सीज़र के नाम की एक दुर्लभ वर्तनी से परिचित होंगे। इस वजह से, कई लोगों ने अन्य स्पष्टीकरणों की तलाश की है, लेकिन मेरा सुझाव है कि यह अभी भी संभव है, विशेष रूप से पद 17 में चिह्न और संख्या और सम्राट के नाम के बीच संबंध के कारण। इसलिए यह संभव है कि जॉन नीरो की ओर इशारा कर रहा है नाम, फिर से, बुराई के एक मॉडल के रूप में जो अब रोमन साम्राज्य के शासन में फिर से सामने आ रहा है, जैसा कि वह लिखते हैं।

एक अन्य संभावना संख्या 666 को देखने की है। एक अन्य सामान्य दृष्टिकोण यह है कि इसे एक मानव की संख्या के रूप में देखा जाता है, अर्थात्, एक मानव संख्या या पूर्ण संख्या सात में से एक कम। तो 666 पूर्ण संख्या 777 से एक कम होगा।

तो यह पापी, पतित, ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक मानवता की संख्या होगी जो अब मानव शासक डोमिनियन में सन्निहित है, जिसे अब एक अपूर्ण, दुष्ट, मूर्तिपूजक और धोखेबाज इंसान के रूप में चित्रित किया गया है जो सही संख्या सात से कम है। और इसलिए यह लेखक का तरीका है कि वह पाठकों को रोम और उसके सम्राट को ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक के रूप में देखकर उसकी वास्तविक प्रकृति को समझने की कोशिश करे, यह रोमन साम्राज्य और उसके सम्राट की ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक प्रकृति पर जोर देने का एक और तरीका है। शायद उसे नीरो के साथ जोड़ा जा रहा है, लेकिन अब उसे इस रूप में चित्रित किया जा रहा है कि उसका नाम पूर्ण संख्या सात से कम है। इसके बजाय वह अपूर्णता, बुराई और मूर्तिपूजा का प्रतीक है, और यह समझने से कि वह कौन है जो इसका प्रतीक है, अब ईसाई बेहतर विरोध करने में सक्षम होंगे और रोमन साम्राज्य की ईश्वरविहीन, मूर्तिपूजक प्रथाओं से धोखा नहीं खाएंगे।

और इसलिए 12 और 13 हमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण खंड के अंत में लाते हैं, जो सच्चे सर्वनाशकारी फैशन में, न केवल रोम की वास्तविक प्रकृति का खुलासा कर रहा है, बल्कि रोम एक घृणित जानवर है जो शैतानी रूप से प्रेरित है और बुराई और मूर्तिपूजा और उत्पीड़न और ईश्वरहीनता का प्रतीक है। पिछली पीढ़ियों और साम्राज्यों के सभी लोग अब रोम में रहते हैं, लेकिन यह ईसाइयों के लिए उनके संघर्ष का असली स्रोत भी बताता है। पॉलीन भाषा में, उनका संघर्ष केवल मांस और रक्त के साथ नहीं है, बल्कि उनका संघर्ष स्वर्गीय लोकों के अधिकार और शासक स्वयं शैतान के साथ है। और अब इस नए दृष्टिकोण और ज्ञान से लैस होकर, परमेश्वर के लोग अब अपनी स्थिति को एक नई रोशनी में समझने और देखने में सक्षम हैं।

उन ईसाइयों को जागरूक करने के लिए जो समझौता कर रहे हैं, जागें और विरोध करें, यह एहसास कराएं कि वे क्या करने के खतरे में हैं, लेकिन उन ईसाइयों को जागरूक करने के लिए जो पीड़ित हैं और यहां तक कि सताए जा रहे हैं, उन्हें दृढ़ रहने और सहन करने और बने रहने के लिए प्रेरित करें। अपने वफ़ादार गवाह को बनाए रखें, चाहे परिणाम कुछ भी हो।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह रहस्योद्घाटन अध्याय 13, द टू बीस्ट्स पर सत्र संख्या 19 है।